हरियाणा की गंदगी से भी दिल्ली में यमुना मैली

संजीव गुप्ता ● नई दिल्ली

यमुना के पानी में जिस अमोनिया की मात्रा बढ़ने पर दिल्ली को बार-बार परेशानी उठानी पड़ती है, उसके लिए राजधानी का सीवरेज ही नहीं, हरियाणा का औद्योगिक कचरा भी एक बड़ी वजह है। हैरत की बात यह कि यह समस्या दूर करने के लिए पांच सालों में कोई खास प्रयास भी नहीं हुआ है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा गठित एक अध्ययन समूह ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 2016 से 2020 तक राजधानी में यमुना नदी में अमोनिया से पैदा होने वाले नाइट्रोजन की मात्रा में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ। 128 पृष्ठों की यह रिपोर्ट सीपीसीबी ने पिछले सप्ताह ही सार्वजनिक की है।

उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सहयोग से सीपीसीबी राष्ट्रीय जल गुणवत्ता निगरानी कार्यक्रम (एनडब्ल्यूएमपी) के तहत 30 स्थानों पर यमुना के पानी की गुणवत्ता की निगरानी करता है। एनडब्ल्यूएमपी के तहत तैयार आंकड़ों के आधार पर अध्ययन समूह ने निष्कर्ष निकाला है कि नदी के पानी में अमोनिया से पैदा होने वाले नाइट्रोजन की सांद्रता सर्दियों के मौसम (नवंबर से मार्च) के दौरान व जनवरी में मुख्य रूप से बढ़ जाती है। जनवरी में यमुना में प्रदूषण का स्तर सबसे ज्यादा होता है। इसी दौरान नदी में पानी का प्रवाह सबसे कम होता है। इससे प्रदूषण या गंदगी बह नहीं पाती। अध्ययन समूह ने हरियाणा में पानीपत और सोनीपत को अमोनिया से पैदा होने वाले नाइट्रोजन की उच्च सांद्रता के संबंध में हाटस्पाट के रूप में भी चिह्नित किया है।

उत्तराखंड में यमुनोत्री से निकलने के बाद यमुना का पानी हरियाणा के पानीपत और सोनीपत में ही पीने और नहाने लायक नहीं रह जाता। दिल्ली में नदी की स्थिति सबसे ज्यादा खराब हो जाती है। रिपोर्ट के मुताबिक ओखला (डाउन स्ट्रीम) में पानी की गुणवत्ता सबसे खराब पाई गई है। वर्ष 2019 में यहां पर बीओडी (बायोकेमिकल आक्सीजन डिमांड) का अधिकतम स्तर 114 तक पहुंच गया था जो नदी के किसी भी अन्य स्थल की तुलना में कई गुना ज्यादा है। बीओडी का स्तर जितना ज्यादा होगा, उसे जैविक तौर पर अपघटित करने के लिए उतनी ही ज्यादा आक्सीजन की जरूरत होगी। पानीपत से शुरू हुआ प्रदूषण का स्तर दिल्ली और उत्तर प्रदेश के इटावा तक यमुना में बना रहता है। इटावा के बाद अन्य नदियों के मिलन से बीओडी का स्तर कम हो जाता है।

सोनीपत में यमुना में गिर रहा दूषित पानी ● जागरण

- पांच वर्षों में नदी में अमोनिया से पैदा होने वाले नाइट्रोजन की मात्रा में नहीं हुआ तनिक भी सुधार
- सीपीसीबी की रिपोर्ट के अनुसार, पानीपत और सोनीपत से यमुना में मिलता है सर्वाधिक अमोनिया

राजधानी के क्षेत्र में नहीं देखा गया कोई खास सुधार

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार राजधानी में यमुना के पानी में मार्च की तुलना में अप्रैल में मामूली सुधार देखा गया है, हालांकि प्रदूषण का स्तर अभी भी मानकों से 1,220 गुना अधिक है। फेकल कोलीफार्म का स्तर 1,200 एमपीएन (मोस्ट प्रोबेबल नंबर) है। अधिकांश सीवरेज उपचार संयंत्र निर्धारित मानकों को पूरा नहीं करते हैं।

नालों में छोड़ रहे दूषित पानी

जासं, सोनीपत: औद्योगिक क्षेत्र में कुछ फैक्ट्रियों से अभी भी क्षेत्र से निकलने वाले बरसाती नाले में अवैध रूप से केमिकल युक्त दूषित पानी छोड़ा जा रहा है। यह नाला ड्रेन में मिलता है और ड्रेन का पानी यमुना में। औद्योगिक क्षेत्र में करीब 800 से अधिक फैक्ट्रियां हैं, जिनमें से करीब 150 फैक्ट्रियों में डाइंग का काम होता है। कुछ फैक्ट्रियों के पास अपने ट्रीटमेंट प्लांट ही नहीं हैं और कुछ के पास मात्र दिखावे के लिए हैं। दूषित पानी सीवर में डालने की शिकायत प्रशासन को करने वाले जयभगवान मलिक ने बताया कि फैक्ट्री संचालक बाज नहीं आ रहे हैं।

चिंता की बात »संपादकीय